मासिक पत्रिका अक्टूबर 2023

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

Maharishi Dayanand Saraswati Marg, B-31/C, Kailash Colony, New Delhi-110048

Tel.: 46678389, 9310140742 • E-mail: samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.in

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	अरुण बहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

गायत्री-गान

-डॉ० रामनाथ वेदालंकार-

वैसे तो सभी वेदमन्त्र अनूठी भावगरिमा से भरे हुए हैं, परन्तु गायत्री मन्त्र भारतीय जनमानस में महामन्त्र के रूप में आदृत हुआ है। **मनु** ने इसकी महिमा के विषय में लिखा है कि, परमेष्ठी प्रजापति ने तीनों वेदों से इसके **एक-एक** पाद को दुहा है। उन्होंने इसका जप ओंकारपूर्वक, तथा भूः, भुवः, स्वः इन **व्याहृतियों**-सहित करने का विधान किया है। और यह लिखा है, कि जो वेदज्ञ विप्र ब्राह्मण दोनों संध्याकालों में इस मन्त्र का जप करता है उसे वेद पढ़ने का पुण्य प्राप्त हो जाता है। एक, यह भी कहा है कि जो द्विज उक्त विधि से एक हज़ार बार जप करता है, वह महीने-भर में बड़े-से-बड़े पाप से छूट जाता है जैसे, साँप केंचुली से। दूसरा, मनु यह भी लिखते हैं कि वह परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

तीसरा, ओ३म् तथा व्याहृतियाँ-सहित लिखने पर, प्रचलित गायत्री मन्त्र का यह रूप होता है-

"ओ३म् भूर्भुवः स्वः।
तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥"

-**ऋ०** ३.६२.१०; **यजु०** ३.३५, २२.६, ३०.२, ३६.३; **साम०** १४.६२

इस गायत्री के तीन नाम प्रसिद्ध हैं : गायत्री ऋचा, सावित्री ऋचा और गुरु मन्त्र। गायत्री नाम का प्रथम कारण इसका गायत्री **छन्द** में निबद्ध होना है। जिस छन्द में **तीन पाद** होते हैं तथा प्रत्येक पाद में **आठ**-आठ अक्षर होते हैं उसे गायत्री छन्द कहते हैं। यदि किसी पाद में एक अक्षर कम हो अर्थात् 8 अक्षरों के स्थान पर 7 अक्षर हों, तो वह छन्द **निचृद्गायत्री** कहलाता है। **प्रस्तुत** गायत्री भी निचृद्गायत्री है, यतः इसके प्रथम पाद में 7 ही अक्षर हैं।

गायत्री छन्द वाले यद्यपि अन्य भी अनेक मन्त्र हैं तथापि गायत्री छन्द वाले मन्त्रों में, अपने **विशेष** अर्थ के कारण प्रस्तुत मन्त्र, गायत्री कहा जाने लगा। गायत्री नाम का दूसरा कारण, इसके गानार्थक **'गै' धातु** से निष्पन्न होना है। इसके द्वारा भक्त भगवान् के **तेज** की प्राप्ति का गान करता है। अतः इसका नाम गायत्री है। उक्त ऋचा का नाम **सावित्री** इस कारण है, क्योंकि इसका देवता 'सविता' है। अर्थात् ऋचा सविता-विषयक है, या सविता के तेज की इसमें प्रार्थना है। इसे 'गुरुमन्त्र' इस कारण कहते हैं, क्योंकि **वेदारम्भ** संस्कार में गुरु, इस मन्त्र के द्वारा ही ज्ञान की प्रथम दीक्षा देता है।

अब विचारणीय यह है कि यदि, इन तीनों वेदों से इस गायत्री ऋचा का एक-एक पाद दुहा गया है, तो ऐसा होना चाहिए कि प्रत्येक पाद् स्वयं में **पूर्ण** अर्थवाला हो। ऐसा नहीं होना चाहिए कि प्रत्येक पाद को अलग-अलग पूर्ण अर्थवाला न मानकर दूसरे पादों से शब्दों को लेकर अन्वय करें। प्रचलित अर्थ-प्रक्रिया यह है - **(वयम्) सवितुः देवस्य तत् वरेण्यं भर्गः धीमहि, यः नः धियः प्रचोदयात्।** परन्तु इसमें प्रत्येक पाद का **स्वतन्त्र** अर्थ **नहीं** रहता। अतः आगे हम इस मन्त्र की ऐसी व्याख्या उपस्थित कर रहे हैं, जिसमें **प्रत्येक** पाद स्वतन्त्र रहता है।

मन्त्र का देवता 'सविता' है। सविता प्रकृति में **सूर्य** का नाम से सूर्य के समान, जो **परम** प्रकाशमान तथा प्रकाश का **स्रोत** है, वह परमेश्वर 'सविता' है। सविता प्रभु, स्वयं ही प्रकाशमान नहीं है, किन्तु सूर्यसम प्रकाशक होकर, वह मानवों के हृदय में भी अपने उस प्रकाश को प्रेरित करने वाला है। 'सविता' का अर्थ **प्रेरक** होता है।

अब हम मन्त्र के भाव पर आते हैं। चौथा, मन्त्र के **तीन** भाग किए जा सकते हैं। तीन ही उसके **चरण** हैं। प्रत्येक में एक-एक भाग आ जाता है। पहला भाग है-**"तत् सवितुर्वरेण्यम्।"** भक्त अपने भगवान् सविता के तेज और प्रकाश पर मुग्ध होकर कहता है-'अहा! देखो, सविता प्रभु की ज्योति कैसी वरणीय है। जो एक बार इसकी झांकी पा ले, वह इस पर लट्टू होकर आनन्द से नाचने लगे। जो एक बार इसके दर्शन कर ले, फिर वह इसे **पाने** के लिए लालायित हो उठे।' सचमुच 'सविता' की ज्योति ऐसी ही उज्ज्वल हैं। उपनिषत्कार उसकी महिमा का गान करते हुए कहते हैं-

'न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं,
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं,
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥'
कठ उप० ५.१५

अर्थात् ऐसी दिव्य उसकी ज्योति है कि, उसके आगे सूर्य-चाँद-तारे सब फीके पड़ जाते हैं। बिजली की चमक उसके आगे कुछ नहीं है। अग्नि की तो बात ही क्या! उसी ज्योति के पुञ्ज में से थोड़ी-सी ज्योति लेकर, ये सब चमक रहे हैं।

तो उस ज्योति के लिए इस गायत्री मन्त्र में भक्त कह रहा है कि उस सविता की ज्योति बड़ी **स्पृहणीय** है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि जब कोई व्यक्ति कोई अद्भुत वस्तु देखता है, या सुनता है, तब एकदम उसके मुख से उस वस्तु की **स्तुति** निकल पड़ती है। वैसे ही, उपासक भगवान् की दिव्य ज्योति को देखकर उसकी स्तुति कर रहा है कि उस सविता की ज्योति **वरणीय** है। अर्थात्, ऐसा है कि उसे देखकर कोई भी चाहेगा, कि यह ज्योति मुझे मिल जाए।

दूसरा, मनुष्य जिसकी स्तुति करता है, उसे फिर अपने लिए मांगता है। इसलिए सविता की स्तुति के उपरान्त, भक्त कह उठता है- 'भर्गो देवस्य धीमहि'। हम चाहते हैं कि सविता का वह स्पृहणीय **प्रकाश,** हमारे **अन्दर** भी स्थित हो जाए। उस आलोक से हमारा हृदय जगमगा उठे।

मन्त्र का तीसरा भाग है- 'धियो यो नः प्रचोदयात्'। सविता के प्रकाश को हम अपने अन्दर क्यों धारण करना चाहते हैं? इसलिए कि वह आकर हमारी **बुद्धि** को प्रेरित कर देवे। मानो हमारी बुद्धि **प्रसुप्त** (सोई) पड़ी है। सविता प्रभु का प्रकाश उसे आकर जगा देगा, और **क्रिया** में प्रेरित कर देगा, जैसे कि सविता सूर्य का प्रकाश प्रातः काल आकर, सोये हुए प्राणियों को जगा देता है, और कर्मों में प्रवृत्त कर देता है। हमारे हृदयों में प्रकाशक व प्रेरक सविता का उदय हो जाने पर, हमारी बुद्धि के **आगे** एक उजाला खिल उठेगा। जिस उजाले में वह **गहन**-से-गहन विषयों का **विवेचन** कर सकेगी। हमारे आगे से अज्ञान का **अंधेरा** मिट जाएगा, और ज्ञान-प्रकाश से हमारा अन्तःकरण अलोकित हो उठेगा। जैसे निष्क्रिय पड़ी, किसी मशीन को कारीगर आकर **मरम्मत** दे देता है वह चल पड़ती है, और नयी वस्तुएँ उस मशीन से बनकर निकलने लगती हैं। वैसे ही हमारी बुद्धि नवीन विज्ञानों की सृष्टि करने में समर्थ हो सकेगी। सविता के प्रकाश को पाकर हमारी बुद्धि कुण्ठित नहीं रहेगी। अपितु **कुशाग्र** तथा **विवेक** की ज्योति से आभासित व स्फुरित हो उठेगी। वैदिक **कोष** 'निघण्टु' के अनुसार 'धी' शब्द **प्रज्ञा** और **कर्म** दोनों का वाची है। सविता के द्वारा प्रदत्त अन्तः प्रकाश से, हमारी बुद्धियाँ और क्रियाएँ **दोनों ही,** लक्ष्य की ओर प्रेरित हो सकेंगी।

यह इस गायत्री मन्त्र का भाव है। इससे हम कल्पना कर सकते हैं कि, क्यों यह समस्त **आर्य** जाति का **मूलमन्त्र** बना हुआ है। 'यह है बुद्धि और **ऊर्ध्वगति** की स्फुरणा का गीत'। हमने अपने मूल मन्त्र में बढ़िया-बढ़िया स्वादिष्ट भोजन नहीं मांगे, असीम धन-दौलत नहीं मांगी, स्त्री-पुत्र- परिजन नहीं मांगे, मांगी है 'दिव्य प्रकाश से जगमगाती हुई बुद्धि और दिव्यक्रिया'। निःसन्देह, वेदमन्त्रों में ऐसी प्रार्थनाएँ हैं कि हमें भरपूर ऐश्वर्य मिलें, सौ वर्ष की आयु मिले, स्त्री-पुत्र- परिजन मिलें। परन्तु मूलमन्त्र में हमारी मूल मांग है, **बुद्धि** और **क्रियाशीलता** की। बुद्धि का झरना हमारे अन्दर झर पड़े, तो बुद्धि के बल से, तथा कर्म से **अन्य सब** ऐश्वर्यों को हम सहज में ही उपलब्ध कर सकते हैं। बुद्धि स्फूर्ति हो गई, सक्रियता, ऊर्ध्वगति एवं लक्ष्य की ओर प्रसरण हो गया तो मानो सब-कुछ मिल गया।

'निरुक्त' में एक प्रसंग आता है कि जब **ऋषि** पैदा होने **बन्द** हो गए, तब मनुष्य देवों से बोले-अब कौन हमारा ऋषि होगा, जो हमें **मार्ग** दर्शाएगा? तब देवों ने उन्हें कहा कि **तर्क** को ही तुम अपना ऋषि समझो। अर्थात् जिस विषय में तुम्हें संशय उपस्थित हो, उसे बुद्धि की कसौटी पर कसकर देख लो। **बुद्धि** तुम्हारे लिए ऋषि का काम करेगी। किन्तु यदि बुद्धि कुण्ठित हो या अर्ध-**निद्रित**-सी हो, तब वह ऋषि का काम नहीं कर सकती। इसीलिए इस गायत्री मन्त्र में मनुष्य प्रार्थना कर रहा है कि 'सविता' अपने प्रकाश से, हमारी बुद्धियों को प्रकाशित, तीक्ष्ण, सजग व क्रिया में **प्रवृत्त** कर देवे। जिससे हम पुरुषार्थी होकर **सन्मार्ग** पर अग्रसर हो जाएँ।

■■

अक्टूबर 2023 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
01	डॉ. महेश विद्यालंकार (011-47064357)	इदं न मम् का स्वरूप
08	डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री (9999426474)	क्या विद्या से अमरत्व प्राप्त हो सकता है?
15	डॉ. श्याम देव (9811864932)	मन की चंचलता
22	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	विजया दशमी का महत्व तथा गुरु विरजानन्द का योगदान
29	श्री तरंग काण्डपाल (7042748906)	सुमधुर भजन

"सत्य-असत्य की परीक्षा के उपाय"

साभार : व्यवहारभानुः

प्र० - सत्य और असत्य का निश्चय किस प्रकार से होता है? प्रश्न क्योंकि जिसको एक सत्य कहता है, दूसरा उसी को मिथ्या बतलाता है, उसका निर्णय करने में क्या-क्या निश्चित साधन हैं?

उ०- पाँच हैं - उनमें से प्रथम ईश्वर, उसके गुण, कर्म, स्वभाव और वेद-विद्या; दूसरा सृष्टिक्रम; तीसरा प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण; चौथा आप्तों का आचार, उपदेश, ग्रन्थ और सिद्धान्त और पाँचवाँ अपने आत्मा की साक्षी, अनुकूलता, जिज्ञासुता, पवित्रता और विज्ञान। ईश्वरादि से परीक्षा करना उसको कहते हैं कि जो-जो ईश्वर के न्याय आदि गुण पक्षपातरहित सृष्टि बनाने का कर्म और सत्य, न्याय, दयालुता, परोपकारिता आदि स्वभाव और वेदोपदेश से सत्य और धर्म ठहरे, वही सत्य और धर्म और जो असत्य और अधर्म ठहरे, वही असत्य और अधर्म है । जैसे कोई कहे कि विना कारण और कर्ता के कार्य होता है सो सर्वथा मिथ्या जानना । इससे यह सिद्ध होता है कि जो सृष्टि की रचना करनेहारा पदार्थ है वही ईश्वर और उसके गुण, कर्म, स्वभाव, वेद और सृष्टिक्रम से ही निश्चित जाने जाते हैं। दूसरा सृष्टिक्रम उसको कहते हैं कि जो-जो सृष्टिक्रम अर्थात् सृष्टि 'गुण, कर्म और स्वभाव से विरुद्ध हो वह मिथ्या और अनुकूल हो वह सत्य कहाता है। जैसे कोई कहे कि बिना माँ-बाप के लड़का, कान से देखना, आँख से बोलना आदि होता वा हुआ है, ऐसी-ऐसी बातें सृष्टिक्रम के विरुद्ध होने से मिथ्या और माता-पिता से सन्तान, कान से सुनना और आँख से देखना आदि सृष्टिक्रम के अनुकूल होने से सत्य ही हैं। तीसरा प्रत्यक्ष आदि आठ प्रमाणों से परीक्षा करना उसको कहते हैं कि जो-जो प्रत्यक्षादि प्रमाणों से ठीक-ठीक ठहरे वह सत्य और जो-जो विरुद्ध ठहरे वह मिथ्या समझना चाहिये। जैसे किसी ने किसी से कहा कि यह क्या है? दूसरे ने कहा कि पृथिवी। यह प्रत्यक्ष है। इसको देखकर इससे कारण का निश्चय करना। अनुमान, जैसे विना बनानेहारे के घर नहीं बन सकता, वैसे ही सृष्टि का बनाने हारा ईश्वर भी बड़ा कारीगर है, यह दृष्टान्त उप- मान और सत्योपदेष्टाओं का उपदेश वह शब्द। भूतकालस्य पुरुषों की चेष्टा, सृष्टि आदि पदार्थों की कथा आदि को ऐतिह्य। एक बात को सुनकर विना सुने-कहे प्रसंग से दूसरी बात को जान लेना यह अर्थापत्ति। कारण से कार्य होना आदि को सम्भव और आठवाँ अभाव अर्थात् किसी ने किसी से कहा कि जल ले आ, उसने वहाँ जल अभाव को जानकर तर्क से जाना कि जहाँ जल है वहाँ से लाकर देना चाहिये, यह अभाव प्रमाण कहाता है। इन आठ प्रमाणों से जो विपरीत न हो वह वह सत्य और जो-जो उल्टा हो वह वह मिथ्या है। आप्तों के आचार और सिद्धान्तों से परीक्षा करना उसको कहते हैं कि जो-जो सत्यवादी, सत्यमानी, पक्षपातरहित, सबके हितैषी, विद्वान्, सबके सुख के लिए प्रयत्न करें वे धार्मिक लोग आप्त कहलाते हैं। उनके उपदेश, आचार, ग्रन्थ और सिद्धान्त से जो युक्त हो वह सत्य और जो विपरीत हो वह मिथ्या है। आत्मा से परीक्षा उसको कहते हैं कि जो-जो अपना आत्मा अपने लिये चाहे, सो-सो सबके लिए चाहना और जो-जो न चाहे, सो-सो किसी के लिए न चाहना। जैसा आत्मा में वैसा मन में, जैसा मन में वैसा क्रिया में होने को जानने की इच्छा, शुद्धभाव और विद्या के नेत्र से देखकर सत्य और असत्य का निश्चय करना चाहिये। इन पाँच प्रकार की परीक्षाओं से पढ़ने-पढ़ानेहारे तथा सब मनुष्य सत्यासत्य का निर्णय करके धर्म का ग्रहण और अधर्म का परित्याग करें और करावें।

■■

"वैदिक विवेक एवं पतंजलि योग परिचय शिविर"

"वैदिक विवेक एवं पतंजलि योग परिचय शिविर" आर्य समाज कैलाश – ग्रेटर कैलाश – 1 में शनिवार 9 सितम्बर से सोमवार 11 सितम्बर, 2023 तक तीन दिन का शिविर लगाया गया। इस शिविर का निर्देशन जिंद हरियाणा स्थित "आत्मोन्नति" आश्रम के आचार्य आशीष जी ने किया । हमारे ऋषि – मुनियों ने वैदिक काल से ही अपने व्याकुल मन को शांत और मस्तिष्क को स्थिर रखने के लिए "योग साधना" की। यदि हम भी अपने मन मस्तिष्क को बस में कर लें, तो हमारे लिए कोई भी लक्ष्य प्राप्त करना आसान है। मानव जिसकी स्वयं कल्पना भी नहीं कर सकता "योग साधना" ऐसी असीम संभावना को संभव कराने की कुंजी है। आचार्य आशीष जी ने "वैदिक विवेक" (VEDIC WISDOM) को संक्षेप में समझाया। मूल से समस्याओं का हटा देना ही "वैदिक विवेक" है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। VEDAS ARE DIVINE KNOWLEDGE GIVEN BY THE ALMIGHTY- आचार्य जी ने महर्षी पतंजलि द्वारा रचित "योग दर्शन" का परिचय दिया। इस शिविर में आचार्य जी ने "योग साधना" के कुछ प्रयोग भी करवाए। साथ ही उन्होंने "अष्टांग योग" भी समझाया। आचार्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती रचित "पंच महायज्ञ विधि" के बारे में भी विस्तार से समझाया। इस शिविर में तीनों दिन 40 से अधिक पुरूष – महिलाएं उपस्थित रहे । यह शिविर पूर्णत: निशुल्क था । इस शिविर को सभी ने बहुत पसंद किया ।

24 सितम्बर 2023 (रविवार)

लाला दीवान चन्द की 139वीं जन्म जयंती पर उनके ट्रस्ट द्वारा यज्ञ का आयोजन

लाला दीवान चन्द का 139वाँ जन्मदिन 24 सितम्बर 2023 को बड़ी भव्य रूप में आर्य समाज में मनाया गया। प्रात: 9 बजे से 10 बजे तक हवन यज्ञशाला में हुआ। तत्पश्चात् 10 बजे से 12 बजे तक कार्यक्रम वैदिक केन्द्र के स्टिल्ट एरिया में सम्पन्न हुआ। दीप प्रज्ज्वलन एवं स्वागत श्री एस.सी. पुरी, अध्यक्ष, लाला दीवान चन्द ट्रस्ट द्वारा हुआ। श्री योगेश मुन्जाल, संरक्षक, श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री अजय सहगल, मंत्री, आर्य समाज-डिफेन्स कॉलोनी, लाला दीवान चन्द ट्रस्ट के अधिकारी व सदस्य आदि उपस्थित हुए। श्री अंकित उपाध्याय के भजन हुए। श्री विनय आर्य जी का व्यख्यान "स्वामी दयानंद सरस्वती जी की शिक्षायें-आज के सामाजिक संघर्ष में उनकी प्रासंगिकता" पर हुआ। मंच का संचालन श्री एस.के. साहनी जी ने किया।

प्रधान श्री विजय लखनपाल ने कहा कि ट्रस्ट ने समय-समय पर आर्य समाज की आवश्यकताओं में दान राशि देकर हमें प्रोत्साहित किया है।

मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा ने अतिथियों का स्वागत पीतवस्त्र के द्वारा किया।

अंत में श्री एस.के. साहनी, मानद निर्देशक ने सबको धन्यवाद दिया तथा सभी को प्रसाद और जलपान लेने के लिए निवेदन किया। यह कार्यक्रम बड़ी सफलता से सम्पन्न हुआ इसमें लगभग 100-120 लोग उपस्थित थे।

लाला दीवान चन्द ट्रस्ट
स्व० दानवीर लाला दीवान चन्द जी
की 139वीं जयंती
दिनांक : 24 सितंबर, 2023 (रविवार)
आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन व स्वागत है।

स्व० दानवीर लाला दीवान चन्द जी
की 139वीं जयंती
आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन व स्वागत है।

लाला दीवान चन्द ट्रस्ट

लाला दीवान चन्द ट्रस्ट
स्व० दानवीर लाला दीवान चन्द जी
की 139वीं जयंती
दिनांक : 24 सितंबर, 2023 (रविवार)

लाला दीवान चन्द ट्रस्ट

लाला दीवान चन्द ट्रस्ट

लाला दीवान चन्द ट्रस्ट